

पर्यावरण प्रदूषण और नियंत्रण

❓ प्रस्तावना:

प्रकृति ने हमें जीवन के लिए आवश्यक सभी साधन — जल, वायु, भूमि, वनस्पति और पशु — निःस्वार्थ भाव से प्रदान किए हैं। यही तत्व मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। किंतु आज का मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति और तेजी से बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ रहा है। इस असंतुलन का परिणाम है — **पर्यावरण प्रदूषण**। यह समस्या आज न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई है।

□ पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ:

जब प्राकृतिक तत्वों — जैसे वायु, जल, मृदा और ध्वनि — में हानिकारक पदार्थों की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे जीव-जंतुओं, पौधों और मनुष्य के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है, तो उसे **पर्यावरण प्रदूषण** कहा जाता है। सरल शब्दों में, जब पर्यावरण अस्वस्थ हो जाता है, तब जीवन संकट में पड़ जाता है।

□□ प्रदूषण के प्रमुख प्रकार:

1. वायु प्रदूषण:

कारखानों, वाहनों और बिजलीघरों से निकलने वाला धुआँ, कोयला व पेट्रोलियम पदार्थों का जलना, तथा खुले में कचरा जलाना वायु को विषैला बना देते हैं। इससे श्वसन रोग, अस्थमा, फेफड़ों का कैंसर और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

2. जल प्रदूषण:

नदियों, तालाबों और झीलों में कारखानों का रासायनिक कचरा, सीवेज और प्लास्टिक फेंकने से जल प्रदूषित होता है। इससे पीने योग्य स्वच्छ जल की कमी बढ़ती जा रही है और जलीय जीवों का अस्तित्व खतरे में है।

3. मृदा (भूमि) प्रदूषण:

अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि की उर्वरता घट रही है। यह प्रदूषण फसलों के माध्यम से मनुष्य के शरीर में पहुँचकर स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है।

4. ध्वनि प्रदूषण:

यातायात, लाउडस्पीकर, मशीनों और औद्योगिक कार्यों से उत्पन्न शोर मानसिक तनाव, नींद की कमी, और कानों की शक्ति घटने का कारण बनता है।

5. रेडियोधर्मी, प्लास्टिक व समुद्री प्रदूषण:

परमाणु परीक्षणों, प्लास्टिक कचरे और समुद्रों में गिराए गए औद्योगिक अपशिष्टों से जल-जीव, मिट्टी और मानव स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ रहा है।

□□ पर्यावरण प्रदूषण के दुष्परिणाम:

प्रदूषण के कारण जलवायु असंतुलित हो रही है। वर्षा का चक्र बिगड़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, और वैश्विक तापमान लगातार बढ़ रहा है। पेड़-पौधे नष्ट हो रहे हैं, जिससे ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है। इसका सीधा परिणाम मनुष्य के स्वास्थ्य, कृषि उत्पादन और पारिस्थितिक संतुलन पर पड़ रहा है।

□ पर्यावरण संरक्षण एवं नियंत्रण के उपाय:

1. **वृक्षारोपण:** अधिक से अधिक पेड़ लगाकर वनों की कटाई को रोका जाए।
2. **स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग:** सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे पर्यावरण-अनुकूल स्रोतों को बढ़ावा दिया जाए।
3. **औद्योगिक अपशिष्टों का उचित निपटान:** कारखानों का गंदा पानी और धुआँ बिना उपचार के बाहर न छोड़ा जाए।
4. **वाहनों का नियंत्रण:** सार्वजनिक परिवहन और विद्युत वाहनों को प्रोत्साहित किया जाए।
5. **प्लास्टिक पर प्रतिबंध:** एकल-प्रयोग (single-use) प्लास्टिक का उपयोग बंद किया जाए।
6. **पर्यावरण शिक्षा:** विद्यालयों और समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना आवश्यक है।
7. **कानूनी नियंत्रण:** प्रदूषण फैलाने वालों पर सख्त कार्रवाई और दंड का प्रावधान हो।

□ अंतरराष्ट्रीय प्रयास:

1972 में **स्टॉकहोम सम्मेलन** के माध्यम से विश्व के देशों ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एकजुट होकर कार्य आरंभ किया। इसके बाद 1982 में **नैरोबी सम्मेलन**, 1992 में **रियो डी जेनेरो सम्मेलन**, और 2006 में **वैश्विक पर्यावरण दिवस** जैसे कई कदम उठाए गए। भारत में भी “स्वच्छ भारत अभियान” और “हरित भारत अभियान” जैसी योजनाएँ इसी दिशा में कार्य कर रही हैं।

□ उपसंहार:

पर्यावरण प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है, जिसका समाधान केवल सरकारों या वैज्ञानिकों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। इसके लिए **हर नागरिक की जिम्मेदारी** है कि वह अपने जीवन में स्वच्छता, वृक्षारोपण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आदत डाले।

यदि हम आज जागरूक नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियाँ एक प्रदूषित और अस्वस्थ पृथ्वी पर जीने को मजबूर होंगी।

□ “प्रकृति हमारी माता है — उसकी रक्षा करना हमारा पहला धर्म है।”